जयपुर एवं सीकर जिले में पशुधन संसाधनों का तुलनात्मक विश्लेषण

*अंकित यादव

शोध सारांश

सीकर जिला विशेषतः कृषि प्रदेश है जो द्वि फसली क्षेत्र है। कृषि आधारित सीकर जिले की अर्थव्यवस्था में पशुधन का अत्यधिक महत्व है। अगर कहा जाये कि सीकर जिले में पाया जाने वाला पशुधन कृषि व्यवसाय का सर्वाधिक प्रगतिशील व लाभांश देने वाला महत्वपूर्ण अंग है यह कहने में तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जिले के कुछ समृद्ध किसानों को छोड़कर अधिकांश कृषक परिवार पशुपालन पर ही निर्भर है। सीकर जिले में पशुधन बहुउद्देशीय उपयोगी है क्योंकि कहीं यह पारिवारिक आवश्यकताएँ पूरी कर रहा है कहीं पशुओं से प्राप्त पदार्थ जैसे– चमड़ा, हड्डी, कृषि व खाल के विभिन्न उद्योग चल रहे हैं। तो कहीं पशुधन से प्राप्त दूध व्यवसाय पनप रहा है। सीकर जिले के लगभग सभी गॉवों में पशुओं की अच्छी संख्या पायी जाती है। इस शोध पत्र में जयपुर व सीकर जिले की विभिन्न तहसीलों में पाये जाने वाले पशुधन वितरण का उल्लेख किया हैं। कृषि अर्थव्यवस्था में पशुधन के बिना विकास नहीं हो सकता । कृषि व पशुपालन साथ–साथ ही किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन व्यवसाय कृषि के साथ–साथ्ज्ञ चलता है, विशेषकर भेड़पालन व्यवसाय से ही भारी संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है। क्षेत्र में प्रमुखतया गाय, बैल, भैंस, भैंसा, भेड़–बकरी, ऊंट इत्यादि पशु सम्पदा पायी जाती है तथा हाल की के वर्षो में कुक्कुट पालन और मछली पालन भी छोटे पैमाने पर शुरू किया जा रहा हैं। अध्ययन क्षेत्र में कमोबेश सम्पूर्ण जिले में गाय–बैल पाये जाते हैं, जिले में हरियाणवी और नागौरी किस्म के गाय बैल पाये जाते है। हरियाणवी नस्ल के गाय बैल जिले की फतेहपुर और लक्ष्मणगढ़ तहसील में अधिकांशतः पाये जाते हैं। यहां गाये दूध देने के काम आती हैं जो 7–10 किग्रा दूध प्रतिदिन देती है तथा बैल खेती करने व बोझा ढोने के काम आते है। नागौरी नस्ल के बैल सीकर व दातारामगढ़ तहसील में पाये जाते है। नागौरी नस्ल के बैल अधिक बलिष्ठ होते है तथा ये पूरे भारत वर्ष में विख्यात हैं हाल ही में जिले में संकर किस्म की व जर्सी गायों का प्रचलन भी बढ़ा हैं, ये गाये अधिक मात्रा में दूध प्रतिदिन 25 से 30 किग्रा तक दे सकती हैं, इनका दूध देशी नस्ल से कम पोष्टिक होता है। यह पशुधन गणना 2018 की पशुगणना पर आधारित है।

संकेतांकः *द्वि फसली, कृषि, अर्थव्यवस्था, पशुधन, व्यवसाय, लाभांश, कृषक, बहुउद्देशीय, पारिवारिक आवश्यकताऐं।*

परिचय :

कृषि अर्थव्यवस्था में पशुधन के बिना विकास नहीं हो सकता। कृषि व पशुपालन साथ–साथ ही किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के जयपुर एवं सीकर जिले में पशुपालन अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। जिले में पशुपालन व्यवसाय कृषि के साथ–साथ चलता है, विशेषकर भेड़पालन व्यवसाय से ही भारी संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है। अध्ययन क्षेत्र के जिलों में प्रमुखतया गाय, बैल, भैंस, भेड़–बकरी, ऊंट इत्यादि पशु सम्पदा पायी जाती है तथा हाल

की के वर्षो में कुक्कुट पालन और मछली पालन भी छोटे पैमाने पर शुरू किया जा रहा हैं।

कृषि अर्थव्यवस्था में पशुधन के बिना विकास नहीं हो सकता। कृषि व पशुपालन साथ–साथ ही किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र जयपुर एवं सीकर जिले में पशुपालन अर्थव्यवस्था का मूल आधार है। अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन व्यवसाय कृषि के साथ–साथ चलता है, विशेषकर भेड़पालन व्यवसाय से ही भारी संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है। जिले में प्रमुखतः गाय, बैल, भैंस, भैंसा, भेड़–बकरी, ऊंट इत्यादि पशु सम्पदा पायी जाती है तथा हाल की के वर्षो में कुक्कुट पालन और मछली पालन भी छोटे पैमाने पर शुरू किया जा रहा हैं।

सारणी सं. 1 : जयपुर एवं सीकर जिले में तुलनात्मक पशुधन (वर्ष 2012)

(संख्या में)

क्र. सं.	पशुधन का नाम	जयपुर जिला	सीकर जिला
1	गाय एवं बैल	634941	254614
2	भैंस	1073386	513102
3	भेड़	229948	319581
4	बकरियाँ	837094	1142930
5	घोडे एवं टट्टू	1175	823
6	गधे एवं खच्चर	1354	2021
7	ऊँट	4896	15486
8	खरगोश	975	753
9	कुक्कुट	337705	97447
	कुल	3121474	2346757

स्त्रोतः जिला पशु जनगणना प्रतिवेदन 2012, जयपुर व सीकर।

सारणी सं. 2 : जयपुर एवं सीकर जिले में तुलनात्मक पशुधन (वर्ष 2012)

(प्रतिशत में)

क्र. सं.	पशुधन का नाम	जयपुर जिला	सीकर जिला
1	गाय एवं बैल	20.34	10.85
2	भैंस	34.39	21.86
3	भेड़	7.37	13.62
4	बकरियाँ	26.82	48.70
5	घोडे एवं टट्टू	0.04	0.04
6	गधे एवं खच्चर	0.04	0.09
7	ऊँट	0.16	0.66
8	खरगोश	0.03	0.03
9	कुक्कुट	10.82	4.15
	कुल	100.00	100.00

स्त्रोतः जिला पशु जनगणना प्रतिवेदन 2012, जयपुर व सीकर।

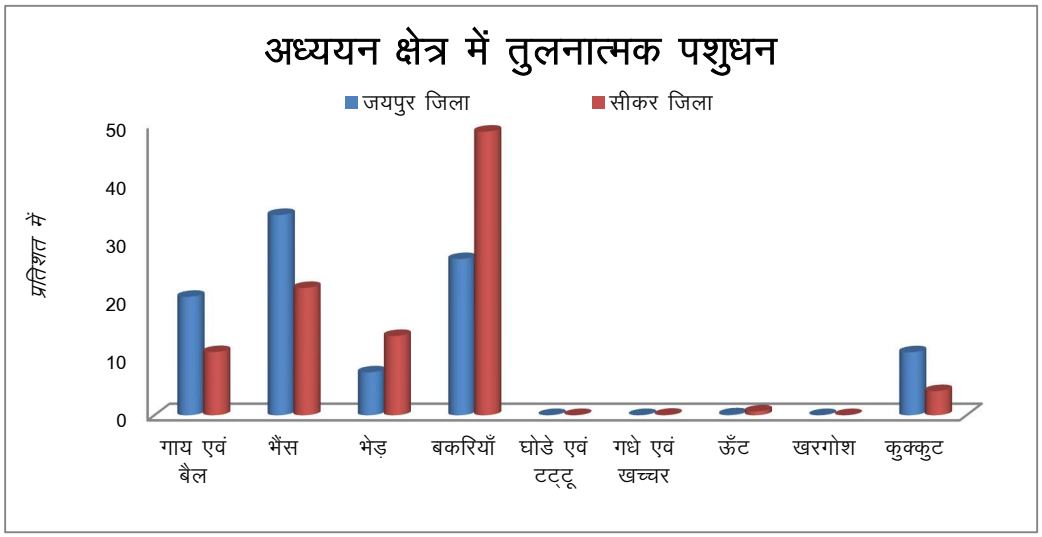

आरेख 1 : अध्ययन क्षेत्र में तुलनात्मक पशुधन

पशुधन का वितरण

गाय–बैल :

अध्ययन क्षेत्र में कमोबेश सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में गाय–बैल पाये जाते हैं, अध्ययन क्षेत्र में हरियाणवी और नागौरी किस्म के गाय बैल पाये जाते है। हरियाणवी नस्ल के गाय बैल अध्ययन क्षेत्र की कोटपूतली, विराटनगर, शाहपुरा, फतेहपुर और लक्ष्मणगढ़ तहसील में अधिकांशतः पाये जाते हैं। यहां गाये दूध देने के काम आती हैं जो 7–10 किग्रा दूध प्रतिदिन देती है तथा बैल खेती करने व बोझा ढोने के काम आते है। नागौरी नस्ल के बैल चौमूं, दूदू, सीकर व दातारामगढ़ तहसील में पाये जाते है। नागौरी नस्ल के बैल अधिक बलिष्ठ होते है तथा ये पूरे भारत वर्ष में विख्यात हैं हाल ही में जिले में संकर किस्म की व जर्सी गायों का प्रचलन भी बढ़ा हैं, ये गाये अधिक मात्रा में दूध प्रतिदिन 25 से 30 किग्रा तक दे सकती हैं, इनका दूध देशी नस्ल से कम पोष्टिक होता है। अध्ययन क्षेत्र जयपुर एवं सीकर जिले में पशु जनगणना 2012 के अनुसार गाय–बैलों की कुल संख्या 889555 थी, जिनमें से 634941 जयपुर जिले में तथा 254614 सीकर जिले में दर्ज किये गये हैं। अध्ययन क्षेत्र के जयपुर जिले के कुल पशुधन का गाय–बैल 20. 34 प्रतिशत तथा सीकर जिले के कुल पशुधन का 10.85 प्रतिशत हैं।

भैस :

भैंस एक काले रंग अथवा भूरे रंग का एक स्थूलकाय पशु है। यहां पर मुर्रा नस्ल की भैंसे बहुतायत में पायी जाती है और पर्याप्त संख्या में हरियाणवी नस्ल की भैंसे भी पायी जाती है। यहां भैंसे औसतन 10 से 14 किग्रा दूध प्रतिदिन देती है। भैंसो की कीमतों में अच्छी भैंस की कीमत 25000 से 30000 रूपये तक होती है। भैंसों का प्रयोग कृषि में होता हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में ''पाडा'' कहते है। अध्ययन क्षेत्र जयपुर एवं सीकर जिले में पशु जनगणना 2012 के अनुसार भैसों की कुल संख्या 1586488 थी, जिनमें से 1073386 जयपुर जिले में तथा 513102 सीकर जिले में दर्ज किये गये हैं। अध्ययन क्षेत्र के जयपुर जिले के कुल पशुधन का गाय–बैल 34.39 प्रतिशत तथा सीकर जिले के कुल पशुधन का 21.86 प्रतिशत हैं। यह पशुधन अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक संख्या में पाया जाता है।

भेड़पालन :

अध्ययन क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भेड़पालन एक महत्वपूर्ण व्यवस्था हैं। अध्ययन क्षेत्र जयपुर एवं सीकर जिले के रेगिस्तानी क्षेत्र में अधिकतर बारानी भूमि हैं। इस कारण यहां पर भेड़पालन का कार्य बड़े पैमाने पर किया जाता है। ग्रामीण क्षेंत्रो के लगभग प्रत्येक परिवार द्वारा भेड़पालन का कार्य किया जाता है। वर्षा कम होने से भेड़पालन एक स्थान से दूसरे स्थान पर अपने परिवार के साथ घुमक्कड़ जीवन बिताते हैं। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक चोकला नस्ल की भेड़े पाई जाती है। चोकला के अलावा यहां पर मारवाड़ी तथा चुरू व झुंझुनूं जिले के सीमावर्ती भागों में नाली नस्ल की भेड़े पाई जाती है। नाली से 2–3 किग्रा ऊन प्रतिवर्ष, मारवाड़ी से 1–2 किग्रा प्रतिवर्ष तथा चोकला से 1.5 से 2 किग्रा ऊन प्रतिवर्ष प्राप्त होती है। इन नस्लों के अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र में हाल ही के वर्षो में संकर नस्ल की भेड़ों की पालन भी किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के फतेहपुर में एक बृहत स्तरीय भेड़पालन फार्म भी स्थापित किया गया है। यह फार्म 8700 एकड़ वन खण्ड में बनाया गया है। इस केन्द्र में मैरिनो नस्ल के नर भैड़ों द्वारा नस्ल सुधारने का कार्य बड़े पैमाने पर संचालित किया जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र जयपुर एवं सीकर जिले में पशु जनगणना 2012 के अनुसार भेड़ों की कुल संख्या 549529 थी, जिनमें से 229948 जयपुर जिले में तथा 319581 सीकर जिले में दर्ज किये गये हैं। अध्ययन क्षेत्र के जयपुर जिले के कुल पशुधन का गाय–बैल 7.37 प्रतिशत तथा सीकर जिले के कुल पशुधन का 13.62 प्रतिशत हैं।

बकरे व बकरियां :

बकरी को ग्रामीण क्षेत्र में गरीब की गाय कहा जाता है। यहां एक अच्छी बकरी 4–6 किग्रा दूध प्रतिदिन देती है।

ब्याव के समय 1–3 बच्चे लाती है, इसे यहां टाट, छयाली के नाम से पुकारते है। अध्ययन क्षेत्र जयपुर एवं सीकर जिले में पशु जनगणना 2012 के अनुसार बकरियों की कुल संख्या 1980024 थी, जिनमें से 837094 जयपुर जिले में तथा 1142930 सीकर जिले में दर्ज किये गये हैं। अध्ययन क्षेत्र के जयपुर जिले के कुल पशुधन का बकरियां 26.82 प्रतिशत तथा सीकर जिले के कुल पशुधन का 48.70 प्रतिशत हैं। अध्ययन क्षेत्र के जयपुर जिले में यह पशुधन भैंस के बाद दूसरे स्थान का है तथा सीकर जिले में इस पशुधन की संख्या सर्वाधिक है।

मत्स्य:

अध्ययन क्षेत्र में मत्स्य पालन भी किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के जिलों में नित्यवाही नदी, नहर, तालाब एवं झीलों के अभाव के कारण यह व्यवसाय ज्यादा उन्नति नहीं कर सका, लेकिन फिर भी मत्स्य पालन कुछ मात्रा में किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र जिले में पाली जाने वाली मुख्य प्रजातियों का उत्पादन वर्ष 2010–11 में 61000 किग्रा. किया गया था जो वर्ष 2017–18 में बढ़कर 99000 किग्रा. हो गया था। केटफिश (लाची, सिंगाड़ा) का उत्पादन वर्ष 2010–11 में नगण्य ही रहा। लकिन अन्य प्रकार की मछलियों का उत्पादन वर्ष 2010–11 में 8000 किग्रा. था जो वर्ष 2017–18 में नगण्य हो गया।

अन्य :

अध्ययन क्षेत्र मे अन्य पशुओं में ऊंट, घोडे, खच्चर व गधे भी पाले जाते है। इसके अलावा आजकल मुर्गीपालन व्यवसाय में भी प्रगति हो रही है। वर्ष 1988 में मुर्गे व मुर्गीया 224432 थे जो वर्ष 2012 में बढ़कर 4568231 हो गये। सरकार की उदार नीति ने भी इस व्यवसाय को बढ़ावा देने में मदद की है।

अध्ययन क्षेत्र में पशुपालन सुविधाएं

अध्ययन क्षेत्र के जयपुर एवं सीकर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन सुविधाओं का अभाव है, जबकि अधिकतर पशुपालन गांवों में ही होता है। अधिकांश पशु गांवों में इलाज के अभाव में मर जाते हैं तथा लोग अंधविश्वास के कारण नीम–हकीम की शरण लेते हैं जो अप्रशिक्षित होते है। सरकार ने पशुओं के इलाज हेतु अस्पतालय व औषधालय खोले हैं जो पर्याप्त संख्या में नहीं हैं।

सारणी संख्या 2 : अध्ययन क्षेत्र में तुलनात्मक पशुपालन सुविधाऐं

क्र. सं.	सुविधाऐं	वर्ष 2007–08		वर्ष 2017–18	
		जयपुर जिला	सीकर जिला	जयपुर जिला	सीकर जिला
1	अस्पताल	112	52	64	118
2	औषधालय	14	17	9	10
3	आधार ग्राम केन्द्र	113	11	–	168
4	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र	179	56	166	318
5	चल पशु चिकित्सालय	1	2	–	14
6	बधिया पशु	56549	24235	76524	48812

स्त्रोतः कार्यालय, जिला पशुपालन अधिकारी, जयपुर एवं सीकर।

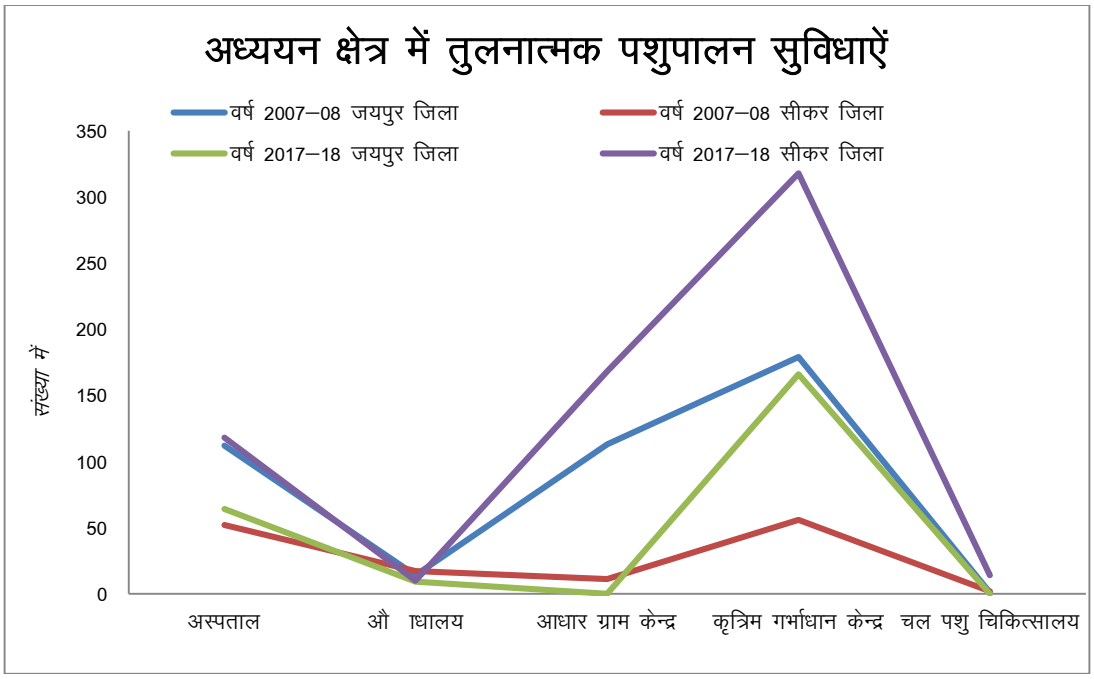

आरेख 2 : अध्ययन क्षेत्र में तुलनात्मक पशुपालन सुविधाऐं

राज्य सरकार ने पशुओं के इलाज हेतु अस्पताल व औ धालय खोले हैं जो पर्याप्त संख्या में नहीं हैं। वर्ष 2007–08 में अध्ययन क्षेत्र में पशु अस्पतालों की संख्या 164 थी, जिनमें जयपुर जिले में 112 तथा सीकर जिले में 52 पशु अस्पताल थे, जो वर्ष 2017–18 तक यह बढ़कर 182 हो गई। वर्ष 2007–08 में कृत्रिम गर्भाधन केन्द्रों की कुल संख्या 235 थी, जो वर्ष 2017–18 में बढ़कर 484 हो गई है। अध्ययन क्षेत्र में औषधालयों की वर्ष 2007–08 में कुल संख्या 31 थी, जो वर्ष 2017–18 में घटकर 19 ही रह गई है। इसी प्रकार वर्ष 2012 की पशु जनगणना में बधिया पशुओं की संख्या में अध्ययन क्षेत्र के दोनों जिलों जयपुर एवं सीकर जिले में वृद्धि हुई है।

निष्कर्ष :

अध्ययन क्षेत्र में प्राथमिक क्षेत्र में सम्मिलित किये जाने वाले अवयवों में पशुपालन एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है। अध्ययन क्षेत्र की जलवायु शुष्क है जिससे पशुधन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा अध्ययन क्षेत्र का उच्चावचीय स्वरूप भी असमान तथा असमतल है जहाँ मरूस्थलीय बालुकास्तूप दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ के बालुकास्तूप गतिशील हैं जो भी पशुधन को प्रभावित करते हैं। क्षेत्र की मृदा भी रेतीली एवं बालू मिट्टी अधिक मात्रा में है जो पशुधन के लिए प्रतिकूल है।

यहाँ का सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का ढांचा भी पशुधन को प्रभावित करता है। अधिक उत्पादकता प्राप्त करने के लिये पशुओं को उत्तम किस्म का चारा प्राप्त नहीं हो पाता है।

अध्ययन क्षेत्र में यातायात मार्गों के विकास के कारण डेयरी उद्योगों की स्थापना की जा रही है। डेयरी उद्यम की सहायता से किसान अपने अधिक लाभ की पशुपालन करने के लिए स्वतंत्र है। क्षेत्र में किसानों को सस्ता श्रम मिल जाने के कारण पशुपालन कार्य करना आसान हुआ है। पशुपालन में यंत्र एवं मशीनीकरण से क्षेत्र में श्वेत क्रांति के परिणाम भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सरकार द्वारा समय–समय पर डेयरी उत्पादों की कीमतें निर्धारित करके किसानों को पशुपालन कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसके अलावा क्षेत्र में संस्थागत सेवाओं जैसे – प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र, गौ सेवा केन्द्र आदि के द्वारा यहाँ के किसानों को जागृत किया जा रहा है। जिस कारण यहाँ का पशुपालन प्रभावित हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में समय–समय पर सरकार द्वारा सहायता से विभिन्न प्रकार के पोष्टिक आहार, दवाइयां, बैंकों से ऋण तथा विभिन्न प्रकार की तकनीक से किसान पशुपालन में परिवर्तन कर रहे हैं।

***शोद्यार्थी**
भूगोल विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ :

1. मीणा, के.एल. (1995): अलवर जिले में डेयरी का विकास व उसका प्रारूप।
2. नायर, एन.के. (1979): प्रगतिशील केरल में दुग्ध उत्पादन आर्थिक और राजनैतिक साप्ताहिक।
3. प्रसाद, ए.जी. (1978): पिछड़े क्षेत्रों में डेयरी योजनाओं का अध्ययन, नियोजन और कुशलता।
4. रामचंद्रन, एल. (1977): भारत की खाद्य समस्याएं: एक नवीन दृष्टिकोण, एलाइड पब्लिशर्स, मुम्बई।
5. सिंह, सुरेन्द्र (1979), ऑपरेशन फ्लड द्वितीय स्वीकृत कार्यात्मक आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिकी।
6. सिंह, जे.बी. (1996): दक्षिणी राजस्थान में डेयरी के माध्यम से आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन।